चार शब्द...

स्थिति के यथार्थ मर्म को समझें

महावाक्य व मुरली सुनते हुए अक्सर हम चार शब्द सुनते हैं जिसकी प्रैक्टिस हम सभी भी करते हैं लेकिन उन चारों शब्दों को वास्तविक अर्थ में न समझने के कारण हम उन्हें एक ही समझ लेते हैं। इसको जानकर और उसके भावार्थ व गहराई को समझकर पुरूषार्थ करें तो उसकी अनुभूति करने में हमें मदद मिलेगी। एक है विदेही स्थिति, दूसरा आत्म-अभिमानी स्थिति, तीसरा अशरीरी स्थिति और चौथा देही-अभिमानी स्थिति।

विदेही स्थिति : विदेही स्थिति का अलग-अलग शब्दों में इस्तेमाल किया जाता है। विदेही शब्द का अर्थ है निराकारी स्वरूप। जैसे कहते हैं 'विदेही बाप' माना जिन्हें अपनी देह नहीं है। तो उन्हें कहते हैं विदेही बाप। हमको भी विदेही बनना है। शरीर को भूलना है। हमें विदेही बनना है माना बाप समान निराकारी बनना है। जैसे बाप निराकार है, वैसे ही हम भी निराकार हैं, उस स्थिति का अनुभव करना।

अशरीरी स्थिति : अशरीरी का अर्थ है शरीर में होते भी शरीर का भान न रहे। स्थूल में रहते हुए शरीर की फीलिंग न रहे। बाबा हमेशा कहते हैं "विदेही बाप अपने बच्चों को विदेही बनाने आये हैं।" यह कभी नहीं कहेंगे कि "अशरीरी बाप अपने बच्चों को अशरीरी बनाने आये हैं।" तो दोनों का अर्थ अलग-अलग है। विदेही माना निराकारी और अशरीरी माना देह की फीलिंग से परे।

आत्म-अभिमानी स्थिति : आत्म-अभिमानी अवस्था माना स्वयं को आत्मा समझना, आत्मा के गुणों को अनुभव करना, स्वयं को आत्मिक स्वरूप में स्थित करना और अनुभव करना। आत्मा के शुद्ध नशे में स्थित होना, ये है आत्म-अभिमानी स्थिति। जैसे आत्मा सतोगुणी है, सुख, शांति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, शक्ति, पवित्रता। इन सभी गुणों में से एक-एक गुण लेकर उसकी गहराई को रियलाइज़ करना, देखना व समझना, इसी को आत्म-अभिमानी स्थिति कहा जाता है।

इस तरह बाबा के जो उच्चारे हुए महावाक्य व शब्द हैं, उनके भावार्थ को यथार्थ रीति से यदि समझें तो पुरूषार्थ में हमारी रुचि बनी रहेगी, उमंग बना रहेगा और अनुभूति होने से, उस स्थिति का रसास्वादन होने से हमें प्रसन्नता का अनुभव होगा। हम बाबा के उच्चारे हुए हर महावाक्य का, शब्दों का इस तरह से अनुभव कर अपने आप को भरपूर कर सर्वगुण सम्पन्न बन सकेंगे।

देही-अभिमानी स्थिति : देही-अभिमानी स्थिति माना इस शरीर में रहते भी स्वयं को इस शरीर का मालिक समझकर कर्म करना। अर्थात् स्वराज्य अधिकारी स्टेज। कर्म-इंद्रियों पर राज करना। कोई भी कर्मेन्द्रिय आपको वशीभूत नहीं कर सकती, आपको धोखा नहीं दे सकती। देह से सम्बंधित कोई भी प्रभाव आत्मा पर न हो बल्कि आत्मा की शुद्धता व पवित्रता का प्रभाव देह की सर्व कर्मेन्द्रियों पर हो। इसी को देही-अभिमानी स्थिति कहते हैं।

उदयपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के मोती मगरी स्कीम सेवाकेंद्र द्वारा मोती मगरी स्कीम पार्क में आयोजित नौ दिवसीय 'अलविदा तनाव हैप्पीनेस प्रोग्राम' के पाँचवे दिन को 'परिवर्तन उत्सव' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में तनाव मुक्ति विशेषज्ञा ब्र.कु. पूनम बहन ने सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरजा व्यास, शहर विधायक ताराचंद जैन, पूर्व महापौर चंद्र सिंह कोठारी, शिक्षाविद प्रो. विमल शर्मा, प्रो. के.पी. तलेसरा, प्रो. रणजीत सिंह सोजतिया, प्रकाश चंद वर्डिया, शिव रतन तिवारी, योगी मनीष, डॉ. राजश्री वर्मा, सी.ए. श्याम सिंघवी व स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रीटा दीदी सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

डीडवाना-राज.। मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महा अभियान कार्यक्रम के दौरान कन्हैया लाल चौधरी,राज्यमंत्री जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी एवं भूजल विभाग को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. वसु बहन। साथ हैं जिला प्रमुख प्रधान भागीरथ जी, जितेंद्र सिंह जोधा,भाजपा प्रत्याशी डीडवाना क्षेत्र तथा अन्य।

जयपुर-बनीपार्क (राज.)। आर.एल.रैना,कुलपति,नेशनल यूनिवर्सिटी,जयपुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी एवं ब्र.कु. चन्द्रकला बहन।

02/24-पहेली का उत्तर

अव्यक्त मुरली 30-03-2000

ऊपर से नीचेः 1.मालिक, 2. रथ, 3. अविनाशी, 4. फरिश्ता, 7. कर्ज, 8. भय, 9. विश्व, 10. गोल्ड, 11. संसार, 12. रक्षाबंधन, 14. सम्मान, 17. लास्ट, 20. पूजा।

बायें से दायें :1. मास्टर, 3. अनादि, 4. फल, 5. कर्म, 6. नाटक, 9. विजय, 11. संस्कार, 13. मोल्ड, 14. समय, 15. नर, 16. मम्मा, 18. वध, 19. लास्ट, 20. पूज्य, 21. सजा।

मोदू-अरुणाचल प्रदेश। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से आस्था एकेडमी में सभी छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को 'जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू। इस मौके पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. जयंती बहन, वरिष्ठ पत्रकार बी.के. राणा, प्रिंसिपल राजन उपाध्याय, उप प्रिंसिपल सुनाली उपाध्याय, ब्र.कु. विश्वजीत भाई तथा सभी शिक्षक स्टाफ उपस्थित रहे।

ठाकुरगंज-बिहार। 19वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल के कमांडेंट स्वर्ण जीत शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शारदा दीदी।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-03 (2024 -25)

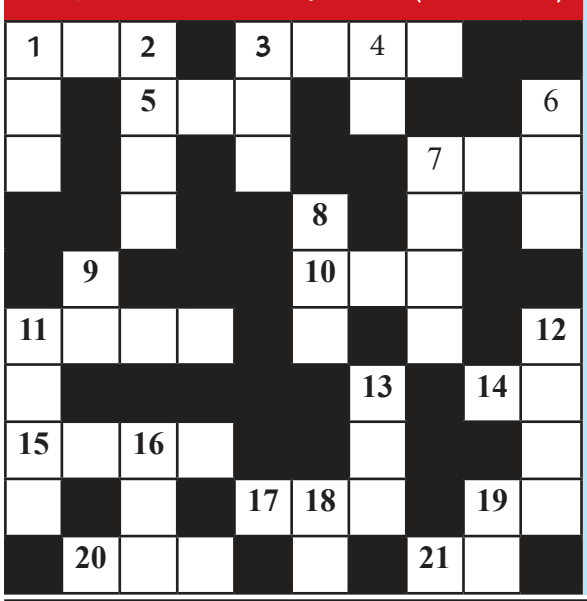

ऊपर से नीचे

1. अचानक के पेपर में यह ..... का अभ्यास बहुत आवश्यक है, शरीर से न्यारा (3)
2. ..... भोजन खाने से नींद, आलस्य, मानसिक बोझ, मनोविकार तथा अपराधिक प्रवृत्तियां बढ़ती हैं। (4)
3. अभी तो ..... सो मालिक हो। बालक मास्टर है। बच्चे को सदा कहा जाता है मास्टर। (3)
4. बापदादा पूछते हैं कि हे ..... के बच्चे मास्टर ..... कब अपने मास्टर ..... पन का पार्ट तीव्रगति से विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेंगे? (2)
6. अभी आप सबकी ..... ऐसी हो जो आपकी ..... से बाप और दादा का चित्र देखने में आये। (3)
7. ..... पेपर अचानक होना है, डेट फिक्स नहीं होनी है। (4)
8. रूई, सूत (3)
9. प्राणी, देहधारी, प्राणधारी (2)
10. अपने लिए सोचते हो-यह तो होता ही है, इतना तो होगा ही और दूसरों के लिए सोचते हो यह क्यों किया, क्या किया। इन सब बातों को पेपर समझकर ..... होने का लक्ष्य रख करके ..... करो। ..... होना है, ... करना है और बाप के ..... रहना है तो फुल ..... हो जायेंगे। (2)
11. आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट, ... , स्वीटेस्ट बच्चों को देख रहे हैं। (4)
12. मदद करना, सहायता करना, सहकार्य (4)
13. ..... पर तिलक लगाते हैं। (3)
16. बापदादा फिर भी ..... दिल है, तो बापदादा डेट बताते हैं अटेन्शन से सुनना। (3)
18. अभी देखो ..... को, क्योंकि ..... है मुख्य मंत्री। तो राजा अपने ..... मंत्री को सेकण्ड में आर्डर कर अशरीर, विदेही स्थिति में स्थित कर सकते हो। (2)
19. विलाप करना, शोक करना, दुःखी होना। (2)

बायें से दायें

1. स्वयं भाग्य ..... द्वारा आप भाग्यवान आत्माओं का दिव्य ब्राह्मण जन्म हुआ हैं। (3)
3. ..... बच्चों को देख कर खुश होते हैं। (4)
4. पिता के पिता को ..... कहा जाता है। (2)
5. आप सबको भविष्य में ..... दिल्ली में बनाना है या आसपास बनाना है। (3)
7. बापदादा के पास हर एक बच्चे के दृढ़ संकल्पों की ..... है। (3)
10. परमात्मा आकर पतित दुनिया को ..... बनाते हैं। (3)
11. सदा ..... और लक्की आत्माओं को बापदादा द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों के अनुभवी आत्माओं को यादप्यार और नमस्ते। (4)
14. रास्ता, मार्ग, पथ (2)
15. हर परिस्थिति में हमें अपनी ..... अवस्था बनानी है। (4)
16. शहद, मधु (2)
17. मुहावरा - ..... का हक़ अदा करना। (3)
19. मरीज़, रोगग्रस्त, बीमार (2)
20. ..... की समाप्ति अचानक होनी है। यह नहीं सोचो कि मालूम तो पड़ेता रहेगा, ... पर ठीक हो जायेंगे। जो ..... का आधार लेता है, ... ठीक कर देगा, या ..... पर ठीक हो जायेगा... उनका टीचर कौन? ..... या स्वयं परम आत्मा? (3)
21. कमजोर को शुभ भावना का बल ....., कमजोरी नहीं देखना। (2)